

## Bihar Board Class 10 Hindi Solutions पद्य Chapter 6 जनतंत्र का जन्म

कविता के साथ

प्रश्न 1.

कवि की दृष्टि में समय के रथ को धर्म नाद क्या है ? स्पष्ट करें।

उत्तर-

कवि स्वाधीन भारत की पराकाष्ठता को मजबूत बनाना चाहता है। बदलते समय में भारत का स्वरूप भी बदल रहा है। आज राजा नहीं प्रजा सिंहासन पर आरूढ़ हो रही है। असीम वेदना सहनेवाली जनता आज जयघोष कर रही है। देश का बागडोर राजा के हाथ में नहीं जनता के हाथ में हो रही है। आज उसका हुंकार सर्वत्र सुनाई पड़ती है। राजनेताओं के सिर पर राजमुकुट नहीं है।

प्रश्न 2.

कविता के आरंभ में कवि भारतीय जनता का वर्णन किस रूप में करता है ?

उत्तर-

वर्षों की पराधीनता की बेड़ी को तोड़कर आज जनता जयघोष करती है। वह हुंकार भरती हुई सिंहासन खाली करने को कहती है। मूर्तिमान रहने वाली जनता आज मुँह खोल चुकी है। पैरों के तले रौंदी जाने वाली, जाड़े-पाले की कसक सहनेवाली आज अपनी वेदना को सुना रही है। पराधीन भारत में जनता त्रस्त थीं। मुँह बंद रखने के लिए विवश थीं। किन्तु आज हुंकार कर रही है।

प्रश्न 3.

कवि के अनुसार किन लोगों की दृष्टि में जनता फूल या दुधमुंही बच्ची की तरह है और क्यों ? कवि क्या कहकर उनका प्रतिवाद करता है?

उत्तर-

सिंहासन पर आरूढ़ रहनेवाले राजनेताओं की दृष्टि में जनता फूल या दुधमुंही बच्ची की तरह है। रोती हुई दुधमुंही बच्ची को शान्त रखने के लिए उसके सामने खिलौने कर दी जाती है। उसी प्रकार रोती हुई जनता को खुश करने के लिए कुछ प्रलोभन दिये जाते हैं। कवि यहाँ कहना चाहता है कि जनता जब क्रोध से आकुल हो जाती है तब सिंहासन की बात कौन कहे धरती भी काँप उठती है। सिंहासन खाली कराकर एक नये प्रतिनिधि को बिठा देती है। देश का बागडोर प्रतिनिधि में नहीं जनता के हाथ में है।

प्रश्न 4.

कवि जनता के स्वज की किस तरह चित्र खींचता है ?

उत्तर-

स्वाधीन भारत की नींव जनता है। गणतंत्र जनतंत्र पर निर्भर है। जनता का स्वप्न अजेय है। सालों सदियों अंधकार युग में रहनेवाली जनता आज प्रकाश युग में जी रही है। वर्षों से स्वप्न को संजोये रखने वाली जनता निर्भय होकर एक नये युग का शुरू उक्त कर रही है। आज अंधकार युग का अंत हो चुका है। विश्व का विशाल जनतंत्र उदय हुआ है। अभिषेक राजा का कहीं प्रजा का होने वाला है।

प्रश्न 5.

विराट जनतंत्र का स्वरूप क्या है ? कवि किनके सिर पर मुकुट धरने की बात करता है और क्यों?

उत्तर-

भारत विश्व का विशाल गणतंत्रात्मक देश है। यहाँ देश का बागडोर राजनेताओं को न देकर जनता को दिया गया है। जनता ही सर्वोपरि है। अपने मनपसंद प्रतिनिधि को ही सिंहासन पर आरूढ़ करती है। कवि जनता के सिर पर मुकुट धरने की बात करता है। कवि का मत है कि गणतंत्र भारत का स्वरूप जनता के अनुरूप हो। जनता को पक्ष में लेकर ही देश की रूपरेखा तैयार की जाये। मनमानी करने वाले राजनेताओं को सिंहासन से उतारकर नये राजनेता को जनता ही आरूढ़ करती है।

प्रश्न 6.

कवि की दृष्टि में आज के देवता कौन हैं और वे कहाँ मिलेंगे?

उत्तर-

कवि की दृष्टि में आप के देवता कठोर परिश्रम करने वाले मजदूर और कृषक हैं। वे पत्थर तोड़ते हुए या खेत-खलिहानों में काम करते हुए मिलेंगे। भारत की आत्मा गाँवों में बसती है। किसान ही भारत के मेरूदंड हैं। जेठ की दुपहरी हो गया ठंडा के सर्दी या फिर मुसलाधार वर्षा सभी में वे बिना थके हुए खेत-खलिहानों में डटे हुए मिलते हैं।

प्रश्न 7.

कविता का मूल भाव क्या है ? संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

प्रस्तुत कविता में स्वाधीनता भारत का सजीवात्मक चित्रण किया है। सदियों बाद जनतंत्र का उदय हुआ है। पराधीन भारत की स्थिति: अत्यन्त दयनीय थीं। चारों तरफ शोषण, कुसुरैकार, अत्याचार आदि का साम्राज्य क्या भारतवासी मुंह बंद कर सबकुछ सहने के लिए विवश थे। पराधीनता की बेड़ी से मुक्त होते ही भारतीय जनता सुख से अभिप्रेत हो गई। जनता सिंहासन पर आरूढ़ होने के लिए आतुर हो गई। मिट्टी की मूर्तिमान रहनेवाली जनता मुँह खोलने लगी है। कभी असीम वेदना को सहनेवाली जनता आज हुंकार भर रही है। गणतंत्र का बागडोर जनता के हाथ में है। मिट्टी तोड़ने वाले, खेत-खलिहानों में काम करने वाले जयघोष कर रहे हैं। आज फावड़ा और हल राजदंड बना हुआ है। आज परिस्थिति बंदल चुकी है। राजनेता नहीं जनता सिंहासन पर आरूढ़ होनेवाली है।

प्रश्न 8.

व्याख्या करें

(क) सदियों की ठंडी-बुझी राख सुगबुगा उठीं,

मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है

(ख) हुंकारों से महलों की नींव उखड़ जाती

साँसों के बल से ताप हवा में उड़ता है, जनता की रोके राह, समय में ताव कहाँ

वह जिधर चाहती काल उधर ही मुड़ता है।

उत्तर-

(क) प्रस्तुत पंक्तियाँ रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित जनतंत्र का जन्म शीर्षक कविता से संकलित है। इसमें कवि स्वाधीन भारत की रूपरेखा को सजीवात्मक रूप से प्रदर्शित किया है। कवि की अभिव्यक्ति है कि स्वाधीनता मिलते ही भारत में जनतंत्र का उदय हो गया है। बुझी हुई राख धीरे-धीरे सुलगने लगी है। सोने का ताज पहनकर भारत आज इठला रहा है। वर्षों से त्रस्त जनता हुंकार भर रही है।

(ख) प्रस्तुत पंक्तियाँ उत्तर छायावाद के प्रखर कवि रामधारी सिंह दिनकर 'द्वारा रचित जनतंत्र का जन्म' शीर्षक कविता से संकलित है। पराधीन भारत की दयनीय स्थिति को देखकर कवि हृदय विचलित हो उठा था। स्वाधीनता मिलते ही उसका मुखमंडल दीप्त हो उठा है। जनता की हुँकार प्रबल बेग से उठती है। सिंहासन की बात कौन कहें धरती भी काँप उठती है। उसके साँसों से ताप हवा में उठने लगते हैं। जनता की रूख जिधर उठती है उधर ही समय भी अपना मुख कर देता है। वस्तुतः यहाँ कवि कहना चाहता है कि जनता ही सर्वोपरि है। वह जिसे चाहती है उसे राजसिंहासन पर आरूढ़ करती है।

भाषा की बात

प्रश्न 1.

निम्नांकित शब्दों के पर्यायवाची लिखें

सर्दी, राख, ताज, सिंहासन, कसक, दर्द, करूण, जनमत, फूल, भूडोल, भृकुटी, काल, तिमिर, नाद, राजप्रसाद, मंदिर।

उत्तर-

सर्दी – साल संवंत

भूडोल – भूकम्प

राख – बुझा हुआ आग

भृकुटी – भकटी – मोह

ताज – मुकुट

काल – समय

सिंहासन – गद्दी

तिमिर – अंधकार

कसक – क्षोभ

नाद – ध्वनि

दर्द – पीड़ा

राजप्रसाद – राजमहल

करूण – सौगन्ध

मंदिर – घर

जनमत – लोगों का मत

फूल – पुष्प

प्रश्न 2.

निम्नांकित के लिंग-निर्णय करें-

ताव, दर्द, वेदना, करूण, हुँकार, बवंडर, गवाक्ष, जगत, अभिषेक, भृंगार, प्रजा।

उत्तर-

ताव – पु०

वेदना – स्त्री०

हुँकार – पु०

गवाक्ष – पु०

अभिषेक – पु०

प्रजा – स्त्री०

दर्द – पु०  
कसम – स्त्री०  
बवंडर – पु०  
जगत – पु०  
शृंगार – स्त्री

प्रश्न 3.

कविता से सामासिक पद चुनें एवं उनके समास निर्दिष्ट करें।

उत्तर-

सिंहासन – सिंह चिह्नित आसन – मध्यमपदलोपी समास

अबोध – न बोध – नञ् समास

जनमत – जनों का मत – तत्पुरुष समास

भूडोल – भूमि का डोलना – तत्पुरुष समास

को पाकुल – कोप से आकुल – तत्पुरुष समास

शताब्दियों – शत आब्दियों का समूह – द्विगु समास

अजय – न जय – नञ् समास

राजप्रासादों – राजा का प्रसादों – तत्पुरुष समास

काव्यांशों पर आधारित अर्थ-ग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर

1. सदियों की ठंडी-बुझी राख सुगबुगा उठी,  
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है;  
दो राह, समय के रथ का घर्घर-नाद सुनो,  
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।

जनता? हाँ, मिट्टी की अबोध मूरतें वही,  
जाड़े-पाले की कसक सदा सहनेवाली,  
जब अंग-अंग में लगे साँप हो चूस रहे,  
तब भी न कभी मुंह खोल दर्द कहने वाली।

जनता ? हाँ, लम्बी-बड़ी जीभ की वही कसम,  
“जनता, सचमुच ही, बड़ी वेदना सहती है।”  
“सो ठीक, मगर, आखिर, इस पर जनमत क्या है?”  
“है प्रश्न गूढ़; जनता इस पर क्या कहती है ?”

मानो, जनता हो फूल जिसे एहसास नहीं,  
जब चाहो तभी उतार सजा लो दोनों में;  
अथवा कोई दुधमुंही जिसे बहलाने के  
जन्तर-मन्तर सीमित हों चार खिलौनों में।

लेकिन, होता भूडोल, बवंडर उठते हैं,  
जनता जब कोपाकुल हो भुकुटि चढ़ाती है;  
दो राह, समय के रथ का घर्घर-नाद सुनो,

सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।

प्रश्न

(क) कवि एवं कविता का नाम लिखें।

(ख) पद्यांश का प्रसंग लिखें।

(ग) पद्यांश का सरलार्थ लिखें।

(घ) पद्यांश का भाव-सौंदर्य स्पष्ट करें।

(ङ) पद्यांश का काव्य सौंदर्य स्पष्ट करें।

उत्तर-

(क) कविता-जनतंत्र का जन्म।

कवि-रामधारी सिंह दिनकर।

(ख) प्रस्तुत पद्यांश में 'जनतंत्र' की स्थापना के लिए जंगी प्रेरणा को उजागर किया गया है। सदियों से देशी-विदेशी, सत्तालोलुप लोग भारत की राज सत्ता पर अपना वर्चस्व कायम रखकर भारत की जनता को गुमराह रखें। अब क्रांति की घड़ी आ गई है। जनता में जागृति आ गयी है। यहाँ की सहनशील जनता अपने सामर्थ्य का आभास कर चुकी है। इन्हीं बातों को उजागर करते हुए कवि ने इस पद्यांश में जनतंत्र-स्थापना की बात कही है।

(ग) प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहते हैं कि भारत में सदियों से राजतंत्र रहा है। राज सत्ताधारी भोली-भाली जनता पर राज किये हैं और सुख भोग किये हैं। जनता चुपचाप शासक का अनुगामी बनकर जीवन व्यतीत करती रही है। हमेशा जनता शांत रही है। सत्ताधारी मनमानी करते रहे हैं। लेकिन अब कालचक्र क्रांति का संदेश लेकर आ चुका है। समय बदल चुका है। सोयी हुई जनता जाग उठी है। वह अपनी शक्ति का आभास कर चुकी है। अब राजतंत्र चलनेवाला नहीं है। जनता स्वयं राजेगद्दी पर बैठेगी। अब ऐसी व्यवस्था कायम होने का समय आ गया है जिसमें भारत की तैंतीस करोड़ जनता राज करेगी कोई एक व्यक्ति राजा नहीं होगा। जनतंत्र स्थापित हेतु समय रूपी रथ आ रहा है जिस पर जनता आरूढ़ होकर आ रही है। नवीन क्रांति का बिगुल बज चुका है।

जनता को सिंहासन पर आसीन करने के लिए सिंहासन को खाली करना होगा। यही समय की पुकार है। जनता अबोध मूरत होती है, सहनशील होती है, जब अंग-अंग को साँप चूसते रहते हैं तब भी मुँह नहीं खोलती है, जनता के मेहनत पर राज करता है। जनता को बहला-फुसलाकर कुछ छोटे-मोटे प्रलोभन देकर स्वयं सत्ता-सुख भोग में लिप्त रहता है। देश की संपत्ति का उपयोग जनता की भलाई में न करके अपनी इच्छाओं, कामनाओं की पूर्ति में लिप्त रहता है। फिर भी जनता चुपचाप सब कुछ सहती रहती है। लेकिन जनता में वह शक्ति है जब वह कोपाकुल होती है, जब जाग जाती है, तब आँधी-तूफान की तरह चल पड़ती है जिसे रोकना मुश्किल है। जनता की जागृति बवंडर लानेवाली होती है जिसका सामना सत्ताधारियों के लिए करना मुश्किल होता है। इसलिए कवि कहते हैं कि अब भारत में समय की पुकार जनतंत्र स्थापना के पक्ष में है। राजतंत्र व्यवस्था समाप्त हो रही है। इसलिए जनता का स्वागत करते हुए राजगद्दी उसे सौंपने की तैयारी किया जाय।

(घ) प्रस्तुत पद्यांश में जनतंत्र की स्थापना की बात कही गयी है। साथ ही जनता की शक्ति का बोध कराया गया है। कवि रामधारी सिंह दिनकर ने ओजस्वी भाव में जनता की महत्ता का बोध कराते हुए उसकी सहनशीलता, धैर्य की बात बड़े ही सहज रूप में कहा है। साथ ही भारत की जनता को अपना अधिकार प्राप्त करने जनतंत्र स्थापित करने, राज सिंहासन पर आरूढ़ होने की प्रेरणा का भाव कवि ने जागृत कर सफल प्रयास किया है। इस पद्यांश में जनता की शक्ति का व्यापक चित्रण किया गया है जो ओज का भाव जगाता है।

- (ड) (i) कविता में खड़ी बोली का प्रयोग है।  
(ii) इसमें ओज गुण की प्रधानता है साथ ही रूपक की विधा का प्रयोग है।  
(ii) कविता में संगीतमयता विद्यमान है।

2. हुंकारों से महलों की नींव उखड़ जाती

माँसों के बल से ताज हवा में उड़ता है; – जनता की रोक राह, समय में ताव कहाँ?

वह जिधर चाहती, काल उधर ही मुड़ता है। अब्दों, शताब्दियों, सहस्रबुद्ध का अन्धकार बीता; गवाक्ष अम्बर के दहके जाते हैं; यह और नहीं कोई, जनता के स्वप्न अजय चीरते तिमिर का वक्ष उमड़ते आते हैं।

सबसे विराट जनतंत्र जगत का आ पहुँचा, तैतीस कोटि-हित सिंहासन तैयार करो;

अभिषेक आज राजा का नहीं, प्रजा का है,

तैतीस कोटि जनता के सिर पर मुकुट धरो। आरती लिए तू किसे ढूँढता है मूरख, मन्दिरों, राजप्रासादों में, तहखानों में ? देवता कहीं सड़कों पर मिट्टी तोड़ रहे, देवता मिलेंगे खेतों में, खलिहानों में। फावड़े और हल राजदंड बनने का है,

धूसरता सोने से श्रृंगार सजाती है; दो राह, समय के रथ का घर्घर-नाद सुनो, सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।

प्रश्न

(क) कवि एवं कविता का नाम लिखें।

(ख) पद्यांश का प्रसंग लिखें।

(ग) पद्यांश का सरलार्थ लिखें।

(घ) पद्यांश का भाव-सौंदर्य स्पष्ट करें।

(ड) पद्यांश का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट करें।

उत्तर-

(क) कविता-जनतंत्र का जन्म।

कवि- रामधारी सिंह दिनकर

(ख) प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने जनता की शक्ति का आभास कराने का पूर्ण प्रयास किया है। कवि ने कहा है कि राजतंत्र की समाप्ति की बेला आ गई है। अब जनतंत्र का उदय होनेवाला है। समय बदल चुका है। अब राजा का नहीं बल्कि प्रजा का अभिषेक होगा। भारत की मेहनती, खेतों में काम करनेवाली जनता, मजदूरी करनेवाली प्रजा ही राजा बनेगी। यही समय की पुकार है। यह अटल सत्य है।

(ग) प्रस्तुत पद्यांश में कवि रामधारी सिंह दिनकर ने जनता में निहित व्यापक शक्ति को उजागर किया है। इसमें कहा गया है कि जनता जब जाग जाती है, अपने शक्ति बल का अभ्यास करके जब चल पड़ती है तब समय भी उसकी राह नहीं रोक सकती बल्कि जनता ही जिधर चाहेंगी कालचक्र को मोड़ सकती है। युगों-युगों से अंधकारमय वातावरण में जीवन व्यतीत कर रही जनता अब जागृत हो चुकी है।

युगों-युगों का स्वप्न साकार हेतु कदम बढ़ चुके हैं जिसे अब रोक नहीं जा सकता। भारत में सबसे विराट जनतंत्र स्थापित होना तय हो गया है। कवि कहते हैं कि अब इस नवोदित व्यवस्था में राजा नहीं बल्कि प्रजा स्वयं राजगद्दी पर आसीन होगी। भारत की तत्कालीन तैतीस करोड़ जनता राजा होगी। कवि संकेत करते हैं कि राज्याभिषेक हेतु एक सिंहासन और एक मुकुट नहीं होगा बल्कि तैतीस करोड़ राजसिंहासन और उतने ही राजमुकुट की तैयारी करनी होगी।

भारत की प्रजा की महत्ता को उजागर करते हुए कवि कहते हैं कि आरती लेकर मन्दिरों और राजमहलों में जाने की आवश्यकता नहीं है बल्कि भारत में मजदूरी करते लोग, खेतों में काम कर रही प्रजा, मजदूर, किसान ही यहाँ के देवता हैं उन्हीं को आरती करने की जरूरत है। अब फावड़े और हल राजदंड होंगे, धूसरता स्वर्ण-शृंगार का रूप लेगा। अर्थात् अब मेहनती, परिश्रमी प्रजा को उसका वास्तविक हक मिलेगा। जनतंत्र की जयघोष होगी। समय की इस पुकार को समझते हुए जनता को आरूढ़ होने के लिए सिंहासन खाली करना होगा।

(घ) प्रस्तुत पद्यांश में जनमत की शक्ति के स्वरूप का प्रदर्शन है। इसमें ओज गुण की प्रधानता है। इसके माध्यम से जनमत की शक्ति का बोध कराया गया है। देश के राज सिंहासन का वास्तविक अधिकारी मेहनती, परिश्रमी, खून पसीना बहानेवाली जनता है। इस पद्यांश में जनता की शक्ति, उसकी महत्ता का यथार्थ चित्रण है। आज वास्तविक देवता, किसान एवं मजदूर है, सिंहासन अधिकारी भी वही हैं। ऐसा भाव इस कवितांश में निहित है।

- (ङ) (i) कविता में खड़ी बोली में सहज, सरल एवं सुबोध है।  
(ii) इसमें ओज गुण की प्रधानता है।  
(iii) कविता में संगीतमयता विद्यमान है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

I. सही विकल्प चनें

प्रश्न 1.

“ननांग का जन्म” के कति कौन हैं ?

- (क) कुँवर नारायण  
(ख) रामधारी सिंह दिनकर  
(ग) प्रेमधन  
(घ) सुमित्रानंदन पंत  
उत्तर-  
(ख) रामधारी सिंह दिनकर

प्रश्न 2.

दिनकर के काव्य का मूल-स्वर क्या है?

- (क) ओज एवं राष्ट्रीय चेतना ।  
(ख) शृंगार  
(ग) प्रकृति और सौंदर्य  
(घ) रहस्यवाद  
उत्तर-  
(क) ओज एवं राष्ट्रीय चेतना ।

प्रश्न 3.

जनतंत्र में, कवि के अनुसार राजदण्ड क्या होंगे?

- (क) ढाल और तलवार  
(ख) फूल और भौरे ।  
(ग) फाँवड़े और हल

(घ) बाघ और भालू  
उत्तर-  
(ग) फाँवड़े और हल

प्रश्न 4.  
कवि के अनुसार जनतंत्र के देवता कौन हैं ?  
(क) नेता  
(ख) शिक्षक  
(ग) किसान-मजदूर  
(घ) मंत्री  
उत्तर-  
(ग) किसान-मजदूर

प्रश्न 5.  
भारत सरकार ने दिनकर को कौन सा अलंकरण प्रदान किया ?  
(क) पद्म श्री  
(ख) भारतरत्न  
(ग) अशोक चक्र  
(घ) पद्म विभूषण।  
उत्तर-  
(घ) पद्म विभूषण।

प्रश्न 6.  
भारत में जनतंत्र की स्थापना कब हुई?  
(क) 1947 ई.  
(ख) 1977 ई.  
(ग) 1950 ई.  
(घ) 1967 ई.  
उत्तर-  
(ग) 1950 ई.

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें

प्रश्न 1.  
दिनकर का जन्म ..... गाँव में हुआ था।  
उत्तर-  
सिमरिया

प्रश्न 2.  
दिनकर उत्तर ..... के प्रमुख कवि हैं।  
उत्तर-  
छायावाद



प्रश्न 3.  
दिनकर को ..... पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला।  
उत्तर-  
उर्वशी

प्रश्न 4.  
'संस्कृत के चार अध्याय' पर दिनकर को ..... पुरस्कार प्राप्त हुआ।  
उत्तर-  
साहित्य अकादमी

प्रश्न 5.  
हुँकारों से महलों की ..... उखड़ जाती है।  
उत्तर-  
नींव

प्रश्न 6.  
जनता की ..... रोकना कठिन है। .....  
उत्तर-  
राह

प्रश्न 7.  
जनता बड़ी ..... सहती है।  
उत्तर-  
वेदना

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.  
दिनकर किस भावधारा के कवि हैं ?  
उत्तर-  
दिनकर प्रवाहमान राष्ट्रीय भावधारा के प्रमुख कवि हैं।

प्रश्न 2.  
दिनकर ने काव्य के अतिरिक्त और क्या लिखा है ?  
उत्तर-  
दिनकर ने काव्य के अतिरिक्त गद्य रचनाएँ भी की हैं जिनमें निबंध, डायरी आदि शामिल हैं।

प्रश्न 3.  
“जनतंत्र का जन्म” कविता में किसका जयघोष है ?  
उत्तर-  
‘जनतंत्र का जन्म’ शीर्षक कविता में भारत में जनतंत्र की स्थापना का जयघोष है।

प्रश्न 4.

जनता की भृकुटि टेढ़ी होने पर क्या होता है ?

उत्तर-

जनता की भृकुटि टेढ़ी होने पर क्रांति होती है, राजसत्ता बदल जाती है।

प्रश्न 5.

जनतंत्र में किसका राज्याभिषेक होता है ?

उत्तर-

जनतंत्र में जनता का राज्याभिषेक होता है। वही स्वामी होता है।

प्रश्न 6.

जनतंत्र के देवता कौन हैं ?

उत्तर-

जनतंत्र के देवता हैं, आम लोग, किसान और मजदूर।

प्रश्न 7.

दिनकर की काव्य-भाषा कैसी है ?

उत्तर-

दिनकर की काव्यभाषा ओजस्वी है।